इकाई 5 आधुनिक फ्रांसीसी राज्य का जन्म

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में फ्रांसीसी क्रांति, जनता की लामबंदी तथा नए राजनीतिक विचारों के आगमन के बारे में पढ़ा। इस इकाई में आप प्रशासनिक ढांचे तथा संस्थाओं के रूपांतरण के बारे में पढ़ेंगे जिन्होंने आधुनिक राष्ट्र राज्य को जन्म दिया। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह समझ पाएंगे कि फ्रांसीसी निरंकुशतावाद तथा उसकी प्रकृति के उदय के लिए कौन से कारक जिम्मेदार थे;
- यह जान पाएंगे कि सामंती ढांचे के उन्मूलन के आधार क्या थे;
- प्रशासनिक तथा वैधानिक बदलाव की प्रक्रिया को समझ पाएंगे;
- यह जान पाएंगे कि धर्म, जो सामाजिक तथा राजनीतिक तनाव पैदा कर रहा था, उसका इस्तेमाल राष्ट्रीय निर्माण के लिए किस प्रकार किया गया; और
- उस मजबूत नौकरशाही ढांचे तथा शिक्षा प्रणाली को समझ पाएंगे जिनका निर्माण केंद्रीकृत राज्य के साधनों के रूप में किया गया था।

5.1 प्रस्तावना

सोलहवीं शताब्दी से केंद्रीकरण की प्रक्रिया ने फ्रांस में निरंकुशतावाद को मजबूत कर दिया और अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों तक आते आते फ्रांसीसी राजतंत्र लूई चौदहवें के अधीन केंद्रीकृत निरंकुशतावाद का प्रतीक बन गया, जिसका आधार सामंती सामाजिक ढांचा था। फ्रांसीसी क्रांति ने सामंती व्यवस्था और उसकी राज्य व्यवस्था को पूर्ण रूप से ध्वस्त कर दिया। राष्ट्रीय असेम्बली तथा बाद में नेपोलियन ने बड़ी मेहनत और सुचारू ढंग से काम करते हुए प्राचीन राज्य को एक आधुनिक राष्ट्र राज्य का रूप दे दिया। संस्थाओं, विधान, प्रशासन, न्याय, नौकरशाही, शिक्षा, वित्त और यहां तक कि धर्म को भी नया रूप देने के प्रयास किए गए। इस नए ढांचे के पास एक जनाधार था और इसीलिए उसका स्थायी प्रभाव न केवल फ्रांस अपितु अन्यत्र देशों पर भी पड़ा।

इकाई 4 में आपने फ्रांसीसी क्रांति की प्रगति तथा क्रांतिकारी राजनीति के जन्म के बारे में पढ़ा। इस इकाई में आप यह देखेंगे कि क्रांतिकारी घटनाओं ने किस प्रकार राज्य मशीनरी तथा प्रशासनिक ढांचे का रूप ही बदल दिया। इस सबके परिणामस्वरूप फ्रांस के आधुनिक राज्य का निर्माण हुआ।

5.2 निरंकुश राज्य और सामंती ढांचे का उन्मूलन

फ्रांसीसी निरंकुशतावाद का प्रारंभ सीधे वहां से माना जा सकता है जहां किसान विद्रोहों के कारण सामंती शासक वर्ग के हितों को खतरा पैदा हो गया था। सम्राट ने इस स्थिति में हस्तक्षेप किया तो केवल किसानों की संपत्ति को जमींदारों के अनुचित शोषण से बचाने या सम्राट के मुकाबले अमीर वर्ग को कमजोर करने के लिए नहीं, किंतु इसलिए भी कि उसकी अपनी शक्ति भी किसानों से कर वसूलने पर निर्भर करती थी। अमीरों के पास इसके सिवाय और कोई चारा नहीं था कि वे अपने हितों की रक्षा करने के लिए निरंकुश राज्य की ओर देखें। सम्राट ने सामंती अमीरों से उनके राजनीतिक अधिकार छीन लिए किंतु उनके पास अनेक विशेषाधिकार रहने दिए। शाही निरंकुशतावाद की अनिवार्य संस्थाओं में थी एक सुविकसित वित्तीय मशीनरी (1610 और 1644 के बीच 'ताय' से होने वाली राज्य की वसूली 170 लाख से 44 लाख लीव्र पर पहुंच गई जबकि कुल कर लगभग छः गुना हो गए); भ्रष्टाचारी पदाधिकारियों का एक विशाल नौकरशाही ढांचा; न्यायपालिका के सदस्य; तथा वेतनभोगी अधीक्षक (असाधारण अधिकार प्राप्त शाही अधिकारी)। आवश्यकता से अधिक विशाल राज्य मशीनरी ने वास्तव में तो नगरपालिकाओं और प्रतिनिधिक संस्थाओं की भूमिका ही व्यर्थ कर दी थी (ब्रितनी, प्रोबेंस, बरगंडी, लांग डोक आदि की प्रांतीय असेम्बलियों में बढ़ते केंद्रीकरण का प्रतिरोध किया गया)। शाही प्राधिकार को दैवीय अधिकार के सिद्धांतों ने जीवित रखा हुआ था जिसके अनुसार प्रतिरोध का अधिकार किसी को भी नहीं था। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान, केंद्रीकरण तथा विकेंद्रीकरण के दबावों के बीच तनाव बढ़ रहे थे।

आनस्यैं शासन के दौरान निरंकुशतावादी राज्य की स्वायत्तता एक दोहरा चरित्र धारण कर चुकी थी। इसने उत्पादन के संदर्भ में इस हद तक एक वर्ग जैसी भूमिका अपना ली कि किसानों के अतिरिक्त उत्पादन को हड़पने को लेकर सामंती शासक वर्ग के विभिन्न तत्वों के साथ इसकी प्रतिद्वंद्विता हो गई। दूसरे, राज्य को विभिन्न तरीकों से धन जमा करने तथा समाज की उन्नति करने वाले एक साधन के रूप में देखा जाने लगा। जैसा कि फ्रांस्वा फूरे ने कहा है :

> "पदों पर अधिकार करने, अमीर की पदवी देने तथा केंद्रीकृत प्रशासन के माध्यम से, राज्य तो समूचे नागरिक समाज को निगल रहा था; बूर्जुआ राज्य की तमाम दौलत.... अमीर की पदवी देने के बदले में इसके कोष में समेट ली गई थी... सम्राट के सेक्रेटरी के पदों की बिक्री... नई बुलिंदयों पर पहुंच गई..."

राष्ट्रीय असेम्बली ने जो सबसे पहले काम किए उनमें एक काम यह था कि उसने राज्य मशीनरी के साथ साथ कुलीन जन के विशेषाधिकारों तथा सामंतवाद के अवशेष चिन्हों को नष्ट कर दिया जिससे कि फ्रांस के आधुनिक राज्य का निर्माण हो सके। 4 अगस्त, 1789 की रात को असेम्बली ने एक असामान्य सत्र में अमीरों, पुरोहित वर्ग, कस्बों तथा प्रांतों के वित्तीय विशेषाधिकारों और सामंतीय अधिकारों को भी समाप्त कर दिया।

हालांकि राजनीतिक स्वरूप संवैधानिक राजतंत्र (1789-91) से लोकतांत्रिक गणतंत्र (1792-94), थर्मदॉरी शासन (1795-99) तथा नेपोलियन के कांसुली शासन और साम्राज्य (1799-815) में परिवर्तित होते रहे, फिर भी इस काल के ढांचागत सुधार कहीं अधिक बुनियादी तथा टिकाऊ थे। सामंतवादी राजतंत्र और अमीरों के विशेषाधिकार संपन्न पदों की समाप्ति के साथ साथ आनस्यैं शासन के अधिकांश प्रशासनिक विभाग भी अपने अधिकारियों और संस्थाओं समेत गायब हो गए। 1791 तक फ्रांस में प्राचीन शासन में आमूल चूल परिवर्तन हो चुके थे, और यह काम संपन्न बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में जनता के प्रतिनिधियों ने किया। कुछ समय के लिए अधिकारों के वास्तविक विकेंद्रीकरण की स्थिति रही जिसमें मुख्य जोर निर्वाचन के सिद्धांत पर रहा, किंतु जैकबिन गणतंत्र तथा 'आतंक' काल और उसके बाद आने वाले नेपोलियन के कांसुली शासन के काल में भी विकेंद्रीकरण की एक सदा बढ़ने वाली प्रक्रिया देखी गई।

5.3 फ्रांस का पुनर्निर्माण, प्रशासनिक एवं वैधानिक

प्राचीन शासन को उसके तमाम प्रशासनिक ढांचे के साथ ध्वस्त करने के साथ यह आवश्यक हो गया कि प्रशासनिक इकाईयों का एक सिरे से पुनर्गठन किया जाए। 4 अगस्त 1789 को जिन प्रांतीय

तथा नगरीय शासनों का ध्वंस किया गया था, उनके स्थान पर स्थानीय प्रशासन के एक नए तंत्र की तुरंत आवश्यकता थी। जन व्यवस्था पर असर डालने वाले खाद्यान्न वितरण तथा अन्य मामलों के प्रबंध के लिए भी यह वांछनीय था। 1790 में बने नए ढांचे में 83 डिपार्टमेंटों की स्थापना की गई, जिनमें से प्रत्येक का नामकरण इसके क्षेत्र की एक भौगोलिक विशेषता के आधार पर किया गया। जैसे, नॉरमंडी अथवा आलजास जैसे पारंपरिक नामों को सीधे सीधे नकारते हुए सेन ऐंफेरियर, बास पायरेनी और ओ–रैं जैसे नाम रखे गए। इस सबका लक्ष्य न केवल राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना था किंतु पुराने समय से चली आ रही प्रांतीय प्रतिद्वंद्विता को रोकना भी था। प्रत्येक डिपार्टमेंट में कई जिले थे, प्रत्येक जिले में दो या उससे अधिक कैंटन थे और प्रत्येक कैंटन में अनेक कम्यून थे। प्रत्येक स्तर पर नगर अथवा ग्रामीण कौंसिल या कम्यून के मेयर से लेकर कौंसिल तक संचालक मंडल तथा डिपार्टमेंट के प्रॉक्यूरेटर जनरल तक सभी जनता के चुने हुए अधिकारी थे जिन्हें अधीक्षकों जैसे शक्तिशाली शाही अधिकारियों को हटा कर प्रशासन का कार्यभार सौंपा गया था। चुने गए अधिकारी हमेशा अपने पदों के लायक साबित नहीं हो सकते थे। फिर भी, 1790 के प्रशासनिक तंत्र ने वह बुनियादी ढांचा बनाया जिस पर नेपोलियन ने अपने प्रसिद्ध नागरिक प्रशासन को खड़ा किया। हम इकाई 4 में यह पढ़ ही चुके हैं कि कैसे जैकबिन गणतंत्र के अधीन 'जन सुरक्षा समिति' ने केंद्रीकरण की प्रक्रिया अपनाने के प्रयास किए।

नेपोलियन ने शांति व्यवस्था बहाल करने के उद्देश्य से एक मजबूत केंद्रीकृत सरकार के अधीन फ्रांस का नए सिरे से निर्माण किया और इसके लिए उसने स्वदेशी नीति अपनाई। उसने कार्यकारी अधिकार का जो ढांचा तय किया उसमें प्रशासनिक स्तर के उच्च पदों से निचले स्तर के पदों की ओर प्राधिकार वहन करने की व्यवस्था थी, चुनावों के माध्यम से ऊपर की ओर जाने का विधान नहीं था। नीति निर्माण के लिए पांच कार्य अनुभाग थे – युद्ध, जल सेना, आंतरिक मामले, विधान तथा वित्त। मंत्री किसी कैबिनेट (मंत्रिमंडल) के सदस्य नहीं थे, अपितु वे नेपोलियन के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाली स्टेट कौंसिल के प्रति व्यक्तिगत रूप में उत्तरदायी थे।

कांसुलेट और साम्राज्य ने मिलकर एक पुलिस राज्य बना दिया, किंतु अपने पूर्ववर्ती राज्यों की तुलना में इसकी कार्यप्रणाली अधिक परिष्कृत थी। 1796 में गठित पुलिस मंत्रालय तो फूशे (1799-1810) के अधीन रहा। इसके अधीन चार क्षेत्रीय पुलिस प्रभाग थे जो गुप्तचर पुलिस, सेंसरशिप, जेल, चौकसी, खाद्यान्न की कीमतों तथा मुद्रा बाजार के लिए जवाबदेह थे, हालांकि प्रीफेक्ट और बड़े नगरों के मेयरों ने 'आंतरिक मामलों का मंत्रालय' के अधीन अलग पुलिस अधिकारों को अपने पास ही रखा।

(संविधान असेम्बली के नाम से भी मशहूर) राष्ट्रीय असेम्बली ने 1790 में जिस "प्रशासन विभाग" का गठन किया था, नेपोलियन के समय में उसमें थोड़ा सा फेर बदल करके आरोंदीसमां तथा कैंटन बना दिए गए। जजों, टैक्स कलक्टरों और यहां तक कि पल्ली पुरोहितों जैसे चुने गए प्रशासकों की जगह भी मेयर, प्रीफेक्ट तथा उप प्रीफेक्ट जैसे नियुक्त अधिकारी तैनात कर दिए गए। केंद्रीकृत प्रशासन की नई प्रणाली ने सरकार को इस योग्य बना दिया कि वह देश की संपदा का सदुपयोग पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी ढंग से करने लगी। कर जमा करने की जिम्मेदारी अब केंद्रीय राजकोष के अधीन काम करने वाले वेतनभोगी अधिकारियों की हो गई। कर जमा करने का समूचा काम सुचारू ढंग तथा सक्षमता से होने लगा। जन्म, हैसियत अथवा विशेष अधिकारों के आधार पर अब करों में कोई भी छूट नहीं दी गई। ये बदलाव 1789 में लाए गए थे किंतु यथार्थ में इन्हें नेपोलियन युग में ही लागू किया गया।

नेपोलियन के नेतृत्व में जो कानूनी सुधार किए गए वे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने और कांसुली तथा साम्राज्यिक (इम्पीरियल) शासन स्थापित करने का साधन बन गए। क्रांति के पहले, राजतंत्र ने कानूनी एकता के नाम पर कुछ भी नहीं किया था। फ्रांस में 300 से भी अधिक कानूनी प्रणालियां थीः देश में रोमन कानून अलग चलता था (दक्षिणी फ्रांस में) और पारपरिक कानून अलग (उत्तरी फ्रांस में)। क्रांति के समय में 'कनवेंशन' तो रोमन कानून के अधिनायकवादी तेवर के सख्त खिलाफ थी और पारंपरिक कानून की अधिक उदारवादिता के वह पक्ष में थी।

निर्वाचक असेम्बली ने नागरिक विधान की प्रक्रिया को उस समय शुरू किया जब पैतृक अधिकार, विवाह अनुबंध तथा वसीयत करने की स्वतंत्रता पर गंभीर बहस छिड़ गई। यहां, उत्तराधिकारियों (वारिसों) में उत्तराधिकार की पूर्ण समानता दर्शनीय थी। 1791 के संविधान का उद्देश्य तो नागरिक कानून की एक सामान्य संहिता को स्थापित करना था। विधान सभा ने सितम्बर 1792 में तलाक की संस्था और जन्म, विवाह तथा मृत्यु के धर्मनिरपेक्षीकरण के पक्ष में मतदान किया। लोकसमिति ने भी

अगस्त 1793 में कांबासेरेस की अध्यक्षता में एक वैधानिक संहिता तैयार करने की एक क्रांतिकारी परियोजना का प्रस्ताव रखा।

नेपोलियन की संहिता ने कानून के दोनों स्रोतों के बीच संतुलन बनाया। उसे रोमन कानून में बड़ी खूबी दिखाई दी क्योंकि यह उसके अपने तानाशाही स्वभाव के अनुकूल था। उसकी संहिता में, विशेषकर पारिवारिक मामलों में, रूढ़िवादिता की ओर थोड़ा झुकाव था। पैतृक अधिकार को बहाल किया गया, तलाक की संस्था को भी बनाए रखा गया किंतु उसके प्रतिबंधों को कठोर कर दिया गया। स्त्रियां इस संहिता की मुख्य शिकार बनीं। पत्नियों को उनके पतियों के अधीन कर दिया गया और प्रशासनिक अथवा न्यायिक प्रक्रियाओं में उनकी कोई भूमिका नहीं रही। कनवेंशन ने लिंग की समानता के जिस सिद्धांत की घोषणा करके उसको लागू नहीं किया था, उसे नेपोलियन की संहिता में नकार दिया गया।

नेपोलियन की संहिता में 1793 के सिद्धांत को तो अस्वीकार कर दिया गया, किंतु क्रांतिकारियों ने 1789 में संपत्ति तथा नागरिकता के जिन नए अधिकारों का सुझाव दिया था उसे पूरा का पूरा अपना लिया गया। सामंतवाद तथा सामंती विशेषाधिकारों को समाप्त करने का समर्थन किया गया। 'नेपोलियन संहिता' में नागरिक संहिता (1804) नागरिक व्यवहारविधि संहिता (1806) तथा दंडसंबंधी व्यवहारविधि संहिता शामिल थी। इस संहिता की संरचना व्यक्तियों के परस्पर संबंधों में व्यवस्था एवं स्थिरता लाने, अदालती कार्यवाही को शीघ्रता से निबटाने, विविध प्रांतीय रीतियों के स्थान पर राष्ट्रीय एकरूपता स्थापित करने, नागरिक समानता, धर्म की स्वतंत्रता और एक शक्तिशाली राष्ट्र राज्य के अस्तित्व के लिए किया गया था। यह संहिता अपने ही समय की उपज थी और जिस महान सामाजिक क्रांति के फलस्वरूप इसका जन्म हुआ था यह उसी का साकार रूप थी। जहां तक इसके असर का संबंध है, इसे क्रांतिकारी ही कहा जाएगा। इसने न केवल फ्रांस में, अपितु बेल्जियम, हॉलैंड, लक्समबर्ग, स्विटजरलैंड आदि अन्य अनेक देशों में भी सामाजिक विकास को गहराई से प्रभावित किया।

एकता के कारण, राष्ट्रीय असेम्बली ने 1791 में एक अन्य महत्वपूर्ण पहल जो की, वह थी भार तथा माप की मेट्रिक प्रणाली - ग्राम, मीटर, लीटर - को लागू करना। इसका समूची दुनिया पर स्थायी प्रभाव पड़ा। इस प्रणाली में आसान दशमलव इकाईयों को लागू करके पहले की अव्यवस्था तथा विभिन्नता की स्थिति में से अत्यधिक जरूरी व्यवस्था और एकरूपता को स्थापित किया गया। किंतु, इसे लागू करने की गति धीमी ही रही। एक नए क्रांतिकारी रिपब्लिकन कलैंडर को लाने की क्रांतिकारी शासन की कोशिशें बुरी तरह से असफल रहीं। लोकतांत्रिक गणतंत्र के जन्म से शुरू होने वाले और नए नाम तथा सप्ताहों, महीनों एवं वर्षों के विभाजनों वाले इस कलैंडर को नेपोलियन ने 1806 में औपचारिक तौर पर त्याग दिया।

5.4 धार्मिक विभाजन एवं धर्म संधि (Concordat)

कैथोलिक चर्च को प्राचीन शासन के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में देखा जाता था और इसीलिए 'क्रांतिकारी' शासन ने राष्ट्रीय असेम्बली के अधीन 1790 में 'पुरोहित वर्ग का नागरिक संविधान' लागू किया। उसके बाद, कैथोलिक चर्च का पूरी तौर पर राष्ट्रीकरण हो गया और उसकी संपत्ति को जब्त करके बिक्री के लिए खोल दिया गया। इसी वर्ष से, धर्म एक प्रमुख मुद्दा बन गया और उसने फ्रांसीसी जनता को विभाजित कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि प्रति क्रांतिकारी शक्तियां, अर्थात राजतंत्र समर्थक, आप्रवासी और कैथोलिक चर्च के कट्टर समर्थक मिलकर क्रांतिकारियों के विरुद्ध एक हो गए।

राष्ट्रीय कनवेंशन ने ईसाई मत से विमुख करने की एक नीति का पालन किया। सड़कों के नामों से 'संत' शब्द को हटा दिया गया, चर्चों को क्रांतिकारी सेनाओं ने लूटमार कर बंद कर दिया और पुरोहितों को विवाह कर लेने को प्रोत्साहित किया गया। ईसाई मत से विमुखता की इस नीति के कारण क्रांति को जितने दोस्त मिले उससे कहीं अधिक उसके दुश्मन बन गए। इसके परिणामस्वरूप, कैथोलिक धर्म एक बांधने वाली शक्ति के रूप में काम करने के बजाए फूट का स्रोत और आम दुराचरण का कारण बन रहा था। फिर भी, फ्रांस ने 'मनुष्य तथा नागरिक के अधिकारों की घोषणा' के अनुच्छेद X में धर्म की स्वतंत्रता को मान्यता देकर एक धर्मनिरपेक्ष समाज का मार्ग प्रशस्त किया।

ऐसा लगता है कि नेपोलियन कैथोलिक चर्च को सामाजिक नियंत्रण, नैतिकता एवं अनुशासन की भावना भरने और विधानसम्मत सत्ता के प्रति अधीनता का उपदेश देने का एक उपयोगी साधन मानता था। उसने 1801 में पोप के साथ समझौता किया, जिसे 'धर्म संधि' के नाम से जाना जाता है। यह कैथोलिक चर्च के साथ मेल की एक सोची समझी और विलक्षण चेष्टा थी, जिसका उद्‌देश्य देश को एक सूत्र में बांधना था। इस समझौते में पोप और कैथोलिक चर्च ने फ्रांसीसी गणतंत्र को मान्यता दी और इस प्रकार यूरोपीय सम्राटों के पोप के साथ किसी भी गठजोड़ की संभावना ही समाप्त हो गई। इस समझौते से निर्वासित राजतंत्र समर्थकों के मकसद को भी धक्का लगा। रोमन कैथोलिक धर्म को अधिसंख्य फ्रांसीसी जनता के धर्म के रूप में मान्यता दी गई। उसके बाद प्रोटेस्टैंट तथा यहूदी मतावलंबियों को भी राज्य ने संरक्षण प्रदान किया। 'प्रथम साम्राज्य' की समाप्ति पर अनेक बड़ी कठिनाइयों के बावजूद धर्म संधि उन आधारों में से एक बनी रही जिन पर आधुनिक फ्रांस का निर्माण हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) आनस्यैं (प्राचीन) शासन के दौरान निरंकुशतावाद के उभरने के दो कारण बताइए।

....

....

....

....

....

2) क्रांतिकाल के दौरान प्रशासनिक पुनर्गठन के क्या उद्‌देश्य थे? पांच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3) नेपोलियन के कानूनी सुधारों ने एक आधुनिक केंद्रीकृत फ्रांसीसी राज्य की स्थापना में क्या योगदान किया? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

4) फ्रांस में धार्मिक मेल मिलाप की स्थिति बनाने में धर्म संधि की क्या भूमिका रही? 60 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

5.5 'आतंक' काल तथा नेपोलियन युद्धों के दौरान नागरिकों की लामबंदी

अठारहवीं शताब्दी की फ्रांसीसी सेनाएं मुख्य रूप से स्वयं सेवकों की पेशेवर फौजें होती थीं जिन्हें लंबे समय की सेवाओं के लिए भर्ती किया जाता था। इनमें विदेशी भी होते थे। जहा तक फ्रांसीसियों का सवाल है, तो सेना में अधिक संख्या शहरियों की होती थी। शासकों ने नागरिक सेना की एक अनिवार्य व्यवस्था लागू की थी जिसे 1726 में स्थायी कर दिया गया। फ्रांसीसी समाज में विशेषाधिकार समाज के ऊंचे तबके को दिए जाते थे, जबकि लाटरी का बोझ लगभग पूरा का पूरा विशेषाधिकारों से वंचित देहाती लोगों पर पड़ता था। इस का परिणाम यह हुआ कि फांस में लगभग हर कहीं व्यापक रोष तथा प्रतिरोध का माहौल बन गया। किसानों के 'शिकायती रजिस्टर' (1789) में यह एक आम शिकायत थी।

क्रांति के दौरान राष्ट्रीय असेम्बली ने सेना में अनिवार्य भर्ती के विचार को खारिज कर दिया। इस विषय पर चली लंबी बहसों के बाद डिप्टी लोग इस बात पर सहमत हो गए कि फ्रांसीसी नागरिकों पर अनिवार्य सैनिक सेवा के लिए कोई दबाव नहीं डाला जाएगा। किंतु, दो संकट ऐसे बने कि स्वयं सेवकों की एक साल की अनुपूरक सेना के लिए नए सिरे से आहवान किया गया। पहला संकट था 1791 में सम्राट का पलायन जिसने राष्ट्रीय गारद के 'सक्रिय' नागरिकों की शहरी टुकड़ियों अथवा सैनिक पृष्ठभूमि वाले उनके कमसिन साथियों को आकर्षित किया । दूसरा संकट था 1792 में आस्ट्रिया के विरूद्ध युद्ध की घोषणा जिसने किसानों और दस्तकारों को आकर्षित किया क्योंकि एक तो इसमें भर्ती के समय दिया जाने वाला लाभांश अधिक था और दूसरे क्रांतिकारी प्रचार ने इसमें राष्ट्रभक्ति का भाव भी जोड़ दिया था। इस प्रकार सैनिक शक्ति का आम विस्तार 1792 की सैन्य भर्तियों के साथ शुरू हुआ।

वर्ष 1793 के प्रारंभिक महीनों में फ्रांस न केवल आंतरिक समस्याओं, राजभक्त समर्थक विद्रोहों तथा प्रति क्रांतिकारी गुटों की ओर से षडयंत्र के खतरों का सामना कर रहा था, अपितु सीमा पार पराजय को भी झेल रहा था। गठबंधन की ताकतें छः बार फ्रांस का अतिक्रमण कर चुकी थीं। गणतंत्रवादी सरकार को युद्ध तथा 'आतंकी' शासन चलाने के लिए 3,00,000 अतिरिक्त सैनिकों की आवश्यकता थी। कनवेंशन को यह लगा कि काफी संख्या में लोग भर्ती के लिए आगे नहीं आएंगे, इसलिए उसने हरेक डिपार्टमेंट का कोटा तय कर दिया। बयासी डिप्टियों को प्रतिनिधि बना कर प्रांतों में भेजा गया और उन्हें दमन के अंधाधुध अधिकार दिए गए जिससे वे 3,00,000 लोगों की भर्ती के फरवरी 1793 के कानून को लागू करवा सकें। इसके परिणामस्वरूप वांदे प्रांत में जबरदस्त विद्रोह हो गया। प्रत्यक्ष रूप में तो इस विद्रोह का कारण फरवरी के अनिवार्य भर्ती कानून का प्रतिरोध ही था किंतु पिछले चार सालों से दूसरे सामाजिक तनाव भी बन रहे थे।

विदेशी संकट से निपटने और क्रांतिकारी गणतंत्र की उसके विदेशी तथा स्थानीय शत्रुओं से रक्षा करने के लिए 'जन सुरक्षा समिति' ने 23 अगस्त, 1793 को यह आदेश कर दिया कि अठारह से पच्चीस वर्ष तक की आयु वाले सभी लोगों को सभी जगह लामबंद किया जाए। इस 'लेवी एन मास' में यह घोषणा कर दी गई कि जब तक फ्रांस के शत्रुओं को गणतंत्र के शासित क्षेत्र से खदेड़ नहीं दिया जाता तब तक सभी फ्रांसवासी स्थायी तौर पर सेना में भर्ती के लिए उपलब्ध रहेंगे। युवकों से कहा गया कि वे लड़ाई के लिए जाएं, विवाहित पुरूषों को हथियार बनाने और रसद तथा गोला बारूद पहुंचाने का काम सौंपा गया, स्त्रियों को तंबू तथा वर्दियां बनाने और अस्पतालों में घायल सैनिकों की तीमारदारी करने की जिम्मेदारी दी गई, जबकि बच्चों से कहा गया कि वे मरहम पट्टी के लिए चिथड़े ढूंढें और बुजुर्गों को आदेश दिया गया कि वे सार्वजनिक स्थलों पर जा कर योद्धाओं का मनोबल बढ़ाएं। सार्वजनिक इमारतों को बैरक बना दिया गया और सार्वजनिक चौराहों को आयुध कार्यशालाओं का रूप दे दिया गया। 'जन सुरक्षा समिति' के जिम्मे यह काम सौंपा गया कि वह एक ऐसे असाधारण कारखाने की स्थापना के लिए सभी संभव प्रयास करे जहां सभी किस्म के हथियार बन सकें और इस उद्देश्य के लिए जितने आवश्यक हों उतने ठिकाने, कारखाने, कार्यशालाएं मिल बनाए। इस प्रकार, एक वर्ष के अंदर क्रांतिकारी सरकार ने साढ़े सात लाख से भी अधिक सैनिकों की फौज खड़ी कर ली थी। यह यूरोप के इतिहास में किसी भी एक अकेले देश में देखी लामबंद की जाने वाली अब तक की सबसे बड़ी सेना थी।

क्रांतिकारी सेना नागरिकों की सेना थी जिसके सैनिक उग्र सुधार के समर्थक क्रांतिकारियों में से थे और वे नागरिक (गैर सैनिक) अधिकारियों तथा सशस्त्र सेनाओं के बीच सूत्र का काम करते थे जिससे कि अनिवार्य सैनिक भर्ती, खाद्यान्न की कीमत तय करना, किसानों से खाद्यान्न खरीदना और देहाती इलाकों में क्रांति को लोकप्रिय बनाना सुनिश्चित हो सकें। इसने क्रांति के शत्रुओं पर प्रतिशोध तथा निगरानी के साधन का काम किया। इस क्रांतिकारी सेना ने स्थानीय जन संगठनों तथा क्रांतिकारी संगठनों के साथ मिलकर राष्ट्रभक्ति की भावनाओं को मजबूत करने, क्रांतिकारी कलैंडर को लोकप्रिय बनाने तथा अशिक्षितों के लिए स्वतंत्रता के विद्यालय स्थापित करने का काम किया। किंतु इसे नियमित सेना अथवा सेना के स्वयं सेवक समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। ये लोग हालांकि युद्ध क्षेत्रों में सैनिक कमांडरों के अधिकार में और जनपदों तथा नगरपालिकाओं के न्यूनतम नियंत्रण में आते थे, फिर भी वे बिल्कुल स्वाधीन थे और उनमें उचित अनुशासन की कमी थी। क्रांति के नाम पर क्रांतिकारी सेना ने अतिवादी रूख अपनाया और गड़बड़ी फैलाई तथा ज्यादतियां कीं। मार्च 1794 तक इन सेनाओं को समाप्त और भंग कर दिया गया।

नागरिकों की सालाना अनिवार्य भर्ती के विचार की शुरुआत 1798 में हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि दीर्घकालिक लामबंदी के अभाव में सेना का आकार घट रहा था। फ्रांस अपनी आधिपत्य रेखा पर सुरक्षात्मक स्थिति में आ गया था। नेपोलियन के अनिवार्य भर्ती के आदेशों में शुरू शुरू में तो आग्रह और लचीलेपन का आभास मिला। प्रत्येक कम्यून के मेयर और उसकी नगर परिषद को अनिवार्य भर्ती की सिफारिश करने का काम सौंपा गया। डिपार्टमेंट कोटे को कम्यून के छोटे छोटे कोटे में और आगे विभाजित करके शुरू में लाटरी अथवा स्थानीय लोगों की पसंद के अनुसार अन्य किसी माध्यम से भरा जा सकता था। भर्ती के लचीलेपन का यह विचार अंत में त्याग दिया गया क्योंकि नेपोलियन लगातार विदेशों से युद्ध में व्यस्त रहने लगा। भर्ती के लिए एक तीन सदस्यीय मंडल बनाया गया जिसमें प्रीफेक्ट, डिपार्टमेंट का सैनिक कमांडर और एक भर्ती अधिकारी को रखा गया। लामबंदी कानून को 1804 में लागू किया गया और भर्ती का वास्तविक काम अगले वर्ष शुरू हो गया। अनिवार्य भर्ती नेपोलियन के अधीन दो मोर्चों पर लड़ी जाने वाली जंग हो गई। पैसे वाले तो 1500 फ्रांक का जुर्माना दे कर इस भर्ती से बच सकते थे, जबकि गरीब या आम लोगों को कोई छुटकारा नहीं था। अनिवार्य भर्ती से संबंधित नेपोलियन के शुरुआती कानूनों में तो स्थानापन्नता की छूट थी, किंतु लगातार युद्ध की बाध्यता ने अधिकारियों को लामबंदी के अभियान को निरंतर चलाने को मजबूर कर दिया। क्रांतिकारी और नेपोलियन युग ने भारी प्रचार को जन्म दिया। पुस्तकों, परचों, कार्टूनों, भाषणों, कविताओं तथा गीतों सभी का इस्तेमाल जन साधारण का उत्साह बढ़ाने तथा उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने के लिए किया गया।

इतिहासकारों ने फ्रांस में एक विशाल सेना खड़ी करने की दिशा में जनता की लामबंदी के महत्व पर प्रकाश डाला है और उसे आधुनिक राष्ट्रवाद के उदय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना है। नेपोलियन और क्रांतिकारी सरकार की नीतियों में युद्ध की एक नई अवधारणा निहित थी। एक ऐसी राजनीति से प्रेणित तथा क्रांतिकारी सेना का गठन किया गया जिसकी सरकार की विचारधारा में आस्था थी। लेवीएन मास (सामूहिक सैन्य भर्ती) ने एक राष्ट्र को विदेशी शासकों के विरूद्ध दल बल समेत खड़ा कर दिया और उसकी प्रजा को स्वतंत्रता के विचारों में शिक्षित कर दिया। सैनिक सेवा तो राष्ट्रभक्ति की अंतिम अभिव्यक्ति हो गई और उसने सामाजिक स्तरीकरण में ऊपर की ओर चढ़ने के लिए एक नई सीढ़ी प्रदान की, जिसके बारे में 'प्राचीन शासन' के काल में सोचा भी नहीं जा सकता था। फ्रांस तो सेना तथा अन्य अधिकारियों को सामान उपलब्ध कराने वाली एक विशाल सैनिक कार्यशाला बन गया । ठेके दिए गए, मजदूरी तय की गई, औद्योगिक नियम लागू किए गए और वैज्ञानिकों का उपयोग करके युद्ध उपकरणों को आधुनिक बनाया गया। सैनिक सामान के उत्पादन में नौ गुना वृद्धि हुई। इस प्रकार क्रांति काल के युद्धों ने आधुनिक विश्व के सामने पूर्ण युद्ध का द्वार खोला और आधुनिक राष्ट्र राज्य के स्तंभों को मजबूत किया।

बोध प्रश्न 2

1) फ्रांस में सशस्त्र बलों की संख्या बढ़ाने के क्या कारण थे? पांच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) 1793 की सामूहिक सैन्य भर्ती (लेवी एन मास) की नीति को लागू करने हेतु क्या कदम उठाए गए? पांच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3) नागरिकों की व्यापक लामबंदी ने फ्रांस के आधुनिक राष्ट्र राज्य के निर्माण में किस प्रकार योगदान दिया? 100 शब्दों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

5.6 नई नौकरशाही तथा शैक्षिक संस्थाएं

प्रशासनिक स्तर पर केंद्रीकरण के लिए एक प्रभावकारी तथा सशक्त नौकरशाही की जरूरत थी। जैसा कि हम पढ़ ही चुके हैं, फ्रांस में केंद्रीकरण की प्रक्रिया सोलहवीं शताब्दी में शुरू हो चुकी थी। किंतु 'प्राचीन शासन' की नौकरशाही मशीनरी का विकास सरकारी नौकरियों के खरीदे–बेचे जाने के माध्यम से हुआ, जिसे पदों को घूस देकर खरीदे जा सकने की स्थिति भी कहा जाता था। यह इसकी मुख्य कमजोरी बनी रही। पुराने ढांचे के ध्वस्त होने पर एक नए ढांचे की जरूरत बनती थी। इस प्रक्रिया की शुरुआत क्रांति काल में हुई और इसे पूर्णता मिली नेपोलियन के शासन में।

क्रांतिकारी शासन ने प्रशासन की नई इकाईयों के रूप में 83 'डिपार्टमेंट' का गठन किया था। 'अधीक्षक', 'बेलिफ' जैसे सशक्त शाही अधिकारियों के स्थान पर स्थानीय राजकीय डिपार्टमेंट, जिलों तथा कम्यूनों की एक नई तीन स्तरीय एकरूप प्रणाली बनाई गई। प्रत्येक स्तर पर, स्थानीय सरकारी अधिकारियों का चयन सक्रिय नागरिक करते थे। जजों, टैक्स कलक्टरों, पल्ली पुरोहितों तथा बिशपों तक का चुनाव मत के आधार पर होता था। व्यावहारिक स्तर पर, स्थानीय परिषदों को अधिक अधिकार प्राप्त थे। इसके परिणामस्वरूप कुछ विकेंद्रीकरण हुआ। आतंक काल (1793-94) में 'मकसद के लिए नियुक्त' अधिकारी पहले के अधीक्षकों की तरह सैनिक टुकड़ियों के काम में तालमेल करने का दायित्व निभाते थे, और जैकबिन समितियों का इस्तेमाल प्रतिरोध को कुचलने में किया जाता था। जन सुरक्षा समिति के माध्यम से केंद्रीकरण की प्रक्रिया ने उनके अधिकारों में और भी बढ़ोतरी कर दी।

नेपोलियन ने फ्रांस के नौकरशाही ढांचे को तर्कसंगत बनाने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर काम किया। इसके लिए उसने एक शक्तिशाली केंद्रीकृत प्रशासनिक मशीनरी तैयार की। उसने 'डिपार्टमेंट' प्रशासन को तो बनाए रखा, किंतु स्थानीय स्तर पर चुनी गई असेम्बलियों को समाप्त करके उनकी जगह वह नए अधिकारियों को ले आया। इन अधिकारियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे प्रीफेक्ट। इन सभी की नियुक्ति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में नेपोलियन ने ही की। ये प्रीफेक्ट बड़ी तड़क भड़क वाली वर्दी पहनते थे और शान से रहते थे; उन्हें बड़ी बड़ी जिम्मेदारियां दी गई थी और अपने अपने डिपार्टमेंट में उन्हें अपार अधिकार मिले हुए थे। फिर भी वे पूरी तौर पर पुलिस एवं आंतरिक मामलों के मंत्री के अधीन थे। प्रीफेक्ट तो पेरिस की सरकार और स्थानीय शासन के बीच संपर्क सूत्र बन गए और एक केंद्रीकृत नौकरशाही के रूप में काम करने लगे। डिपार्टमेंट परिषदों के प्रति उत्तरदायी

होने की बजाय ये प्रीफेक्ट ऊपर से नियंत्रित होते थे। इन्हें अलोकप्रिय नीतियों को लागू करने का काम सौंपा जाता था। जैसे, धर्म संधि के बाद नए संवैधानिक पल्ली पुरोहितों को प्रतिष्ठापित करना, अलोकप्रिय करों का आकलन कर उन्हें लागू करना, स्थानीय स्तर पर अनिवार्य सैनिक भर्ती करना और सेना से सिपाहियों के पलायन को रोकना। उनके अन्य क्रियाकलाप थे मंत्रालयों के लिए आंकड़े एकत्र करना, उप प्रीफेक्ट तथा न्यायाधीशों के कार्यों का निरीक्षण करना, स्थानीय प्रशासनिक कर्मियों का चयन करना, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक कदम उठाना, खाद्यान्न की आपूर्ति बनाए रखना और बाजार तथा कीमतों को नियंत्रण में रखना। इन प्रीफेक्ट का चयन योग्यता, प्रतिभा तथा चुनावों के आधार पर होता था, किंतु नेपोलियन का यह दृढ़ विश्वास था कि प्रतिभा का चयन केवल समाज के ऊंचे स्तरों से संभव था, जिनमें सेना भी शामिल थी। नेपोलियन का यह प्रयास रहा कि क्रांतिकारियों, बुर्जुआ लोगों और 'प्राचीन शासन' के उच्च पदाधिकारियों को मिला कर उन्हें साथ साथ काम करने को कहा जाए। इसके परिणामस्वरूप 'विशिष्ट जन' का एक नया वर्ग उभरा जो पूरी उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान फ्रांसीसी प्रशासन पर हावी रहा। इस प्रकार राज्य की नौकरी ने सामाजिक स्तर बढ़ाने के मार्ग प्रशस्त किए। नेपोलियन ने व्यक्तिगत संरक्षण देकर निष्ठावान ओर सक्षम नागरिक सेवक तैयार किए। उन्हें प्रेरित करने के उद्देश्य से उसने 'सम्मान' और 'अलंकरण' को फिर से लागू किया।

नेपोलियन की शिक्षा योजना जो लंबे समय तक चलने वाले नागरिक तथा सैनिक विप्लव की पृष्ठभूमि में बनी। फ्रांस की आम शिक्षा प्रणाली 'प्राचीन शासन' के दौरान बिल्कुल भी संतोषजनक नहीं थी।

पुराने विश्वविद्यालय जब 1790 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में बंद हो गए तो उसके बाद क्रांतिकारियों ने पुरानी शिक्षा व्यवस्था का स्थान लेने के लिए एक नई शिक्षा व्यवस्था तैयार करने के प्रयास किए। पेरिस, स्त्राज़व्यूर और मोंपेल्ये में फिर से खोले गए मेडिकल स्कूल, प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, केंद्रीय लोक निर्माण विद्यालय जो 1795 में प्रसिद्ध पोलीटेक्निक स्कूल बना, शिक्षकों को प्रशिक्षित करने वाला नॉर्मल स्कूल, और नवगठित राष्ट्रीय कला एवं विज्ञान संस्थान ने पूरी तौर पर विश्ववविद्यालयों अथवा केंद्रीय एवं प्रादेशिक अकादमियों की जगह नहीं ली किंतु उन्होंने विशेषज्ञता के प्रशिक्षण के विकास में निश्चित रूप से योगदान दिया।

डायरेक्टरी (1795-99) के अधीन सरकार अनिवार्यता मुक्त प्राथमिक शिक्षा पर निर्भर करके संतुष्ट थी। स्कूलों का सारा खर्च विद्यार्थियों की फीस से चलता था। उनमें गणतांत्रिक नैतिकता के साथ साथ लिखने, पढ़ने और गणित की प्रेरणाविहीन शिक्षा दी जाती थी। अध्यापकों को बहुत कम वेतन मिलता था। हालांकि पब्लिक माध्यमिक स्कूल बेहतर स्थिति में थे और गणित तथा साहित्यिक एवं ऐतिहासिक विषय पढ़ाते थे, पर वे विद्यार्थियों के चुनाव के बारे में अत्यंत कठोर थे।

नेपोलियन के शासन में शिक्षा तो राष्ट्र निर्माण का एक महत्वपूर्ण साधन बन गई। जहां तक प्राथमिक शिक्षा का संबंध है, शिक्षा के लिए पैसा जुटाने की संयुक्त जिम्मेदारी स्थानीय शासन तथा अभिभावकों की हो गई। गैर सरकारी स्कूल खोलने के नियम आसान कर दिए गए और कैथोलिक शिक्षण संगठनों को प्रोत्साहित किया गया कि वे प्राथमिक शिक्षा की जिम्मेदारी में भागीदारी करें। किंतु नेपोलियन की व्यवस्था में प्राथमिक शिक्षा अपेक्षाकृत उदासीनता की शिकार रही। वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्कृति को समर्पित 'कनवेंशन' के केंद्रीय विद्यालयों का इस्तेमाल 'काडर' बनाने के लिए किया गया। पोलीटेक्निक स्कूल (1794) के दो वर्ष के पाठ्यक्रम के बाद खाद्यान्नों, सड़कों तथा पुलों की विशेषता देने वाले स्कूलों में जगह मिलती थी। यह राज्य की ओर से मिलने वाले वजीफे की बदौलत ही था कि हथियारबंद फौज में बड़ी संख्या में छात्र किसानों तथा दस्तकारों के परिवारों से थे। नेपोलियन के शासन में स्कूल तो यथार्थ में एक सैनिक स्कूल में तबदील हो गया था जिसमें फीस में भारी बढ़ोतरी की गई थी। इस प्रकार ऊंचे तबकों के छात्र हावी होने लगे। नेपोलियन के समय में, माध्यमिक शिक्षा की प्रभावकारी इकाईयां तो 'लिसे' (माध्यमिक स्कूल) थे। ये कुलीन किस्म के स्कूल होते थे जो विज्ञान तथा कुछ प्राचीन क्लासिक समेत सभी विषयों पर जोर देते थे, किंतु उनका मुख्य उद्देश्य होता था छात्रों में सैनिक गुणों का पोषण करना।

वर्ष 1806 में एक नई योजना के फलस्वरूप पेरिस में एक इम्पीरियल यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। पारंपरिक विश्वविद्यालय के विपरीत यह एक एकल, अखंड तथा पिरामिड के आकार का प्रशासनिक ढांचा था जिसकी अध्यक्षता सम्राट का प्रतिनिधि 'ग्रैंड मास्टर' करता था। इस ग्रैंड मास्टर के पास पूरे साम्राज्य के सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों के निरीक्षण का कार्यभार होता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि नेपोलियन शिक्षा को भी एक 'डिपार्टमेंट' मानता था, जिसका प्रशासन तथा केंद्रीकरण एक स्पष्ट आदेश श्रृंखला के अनुसार ऊपर से होना वांछनीय था। वह चाहता था कि उसकी प्रजा सैनिक अनुशासन, लोक प्रशासन तथा सामग्री उत्पादकता के क्षेत्र में उचित रूप में प्रशिक्षित हो। उसने शैक्षिक सुधारों का इस्तेमाल लोगों के मन को नियंत्रित करने के साधन के रूप में किया जिससे उनमें राज्य के प्रति निष्ठा तथा राष्ट्रभक्ति की भावना भरी जा सके। उसने इनका इस्तेमाल गैर सैनिक कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए भी किया। किंतु नेपोलियन की योजनाओं में उसके सामाजिक रूझान तथा स्त्रियों के प्रति उसके तिरस्कार भाव की झलक भी मिलती है। वह स्त्रियों को कर्तव्यपरायण तथा आज्ञाकारी गृहिणियां और मां मानता था जिनकी भूमिका घरेलू मामलों तक ही सीमित रहनी चाहिए। प्राथमिक स्तर की शिक्षा की उपेक्षा के बावजूद, शीर्षस्थ संकायों तथा संस्थाओं समेत फ्रांस की शिक्षा व्यवस्था एक शताबदी तक कायम रही और तब इसका आगे सुधार और विस्तार किया गया।

बोध प्रश्न 3

1) प्रीफेक्ट को नेपोलियन काल की नौकरशाही का आधार क्यों कहा जा सकता है? 100 शब्दों में समझाइए।

....

....

....

....

....

2) क्रांतिकारी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के क्या प्रयास किए? 100 शब्दों में समझाइए।

....

....

....

....

....

5.7 सारांश

इस इकाई में आपने यह पढ़ा कि क्रांति से पहले फ्रांस में विधायी नियंत्रण न होने के कारण वहां किस प्रकार केंद्रीकृत निरंकुशता की स्थिति बन गई और राष्ट्रीय असेम्बली ने इसे किस प्रकार ध्वस्त किया। एक छोटे से अंतराल के बाद, प्रशासनिक केंद्रीकरण की प्रक्रिया जैकबिन गणतंत्र और नेपोलियन बोनापार्ट के काल में जारी रही। सर्वजनीन कानूनी संहिता, सेना के लिए सिपाहियों के रूप में फ्रांसीसी नागरिकों की सामूहिक भर्ती, रोमन कैथोलिक चर्च के साथ मेल, सीधे केंद्र सरकार के अधीनस्थ एक मजबूत नौकरशाही ढांचा तथा उच्च शिक्षा का अतुलनीय केंद्रीकरण कुछ ऐसे संस्थागत बदलाव थे जिन्हें बाद में भी मिटाया नहीं जा सका। इन बदलावों ने फ्रांस को एक आधुनिक राष्ट्र राज्य बना दिया। इन सुधारों को दुनिया के अनेक देशों ने देखा और बाद में उन्हें अपने यहां अपनाया भी।

5.8 शब्दावली

अर्थक्रेय : घूस देकर खरीदा जा सकने वाला।

संसद : तेरह कानूनी अदालतें जिनके पास न्यायिक अधिकार और शाही आदेशों को लागू करने के अधिकार भी थे।

मकसद के लिए नियुक्त अधिकारी : कनवेंशन के सदस्य जिन्हें पूरे प्रशासनिक अधिकार देकर 1793 में प्रदेशों तथा अधिकारी सेना में भेजा गया।

लेवी एन मास : सामूहिक सैनिक भर्ती।

कांसुली : कांसुलेट का शासन।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 5.2।
2) प्रशासनिक पुनर्गठन का प्राथमिक उद्देश्य था राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक ढांचे के स्थान पर एक नए ढांचे को लाना। देखिए भाग 5.3।
3) नागरिक कानून की सामान्य संहिता की स्थापना, दंड संबंधी व्यवहारविधि संहिता, एकरूप अथवा समान कानूनी प्रशासन देना, आदि। देखिए भाग 5.3।
4) देखिए भाग 5.4।

बोध प्रश्न 2

1) आंतरिक समस्याएं, फ्रांस पर गठबंधन ताकतों का आक्रमण आदि। देखिए भाग 5.5।
2) देखिए भाग 5.5।
3) नागरिकों की सेना की लामबंदी से राष्ट्रभक्ति की भावना को मजबूत करने, क्रांतिकारी कलैंडर को लोकप्रिय बनाने, सैनिक उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली, इत्यादि। देखिए भाग 5.5।

बोध प्रश्न 3

1) प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में नेपोलियन द्वारा नियुक्त, अपने प्रांतों में अत्यधिक शक्तिशाली, केंद्रीय तथा स्थानीय प्रशासन के बीच संपर्क सूत्र की भूमिका आदि। देखिए भाग 5.6।
2) देखिए भाग 5.6।
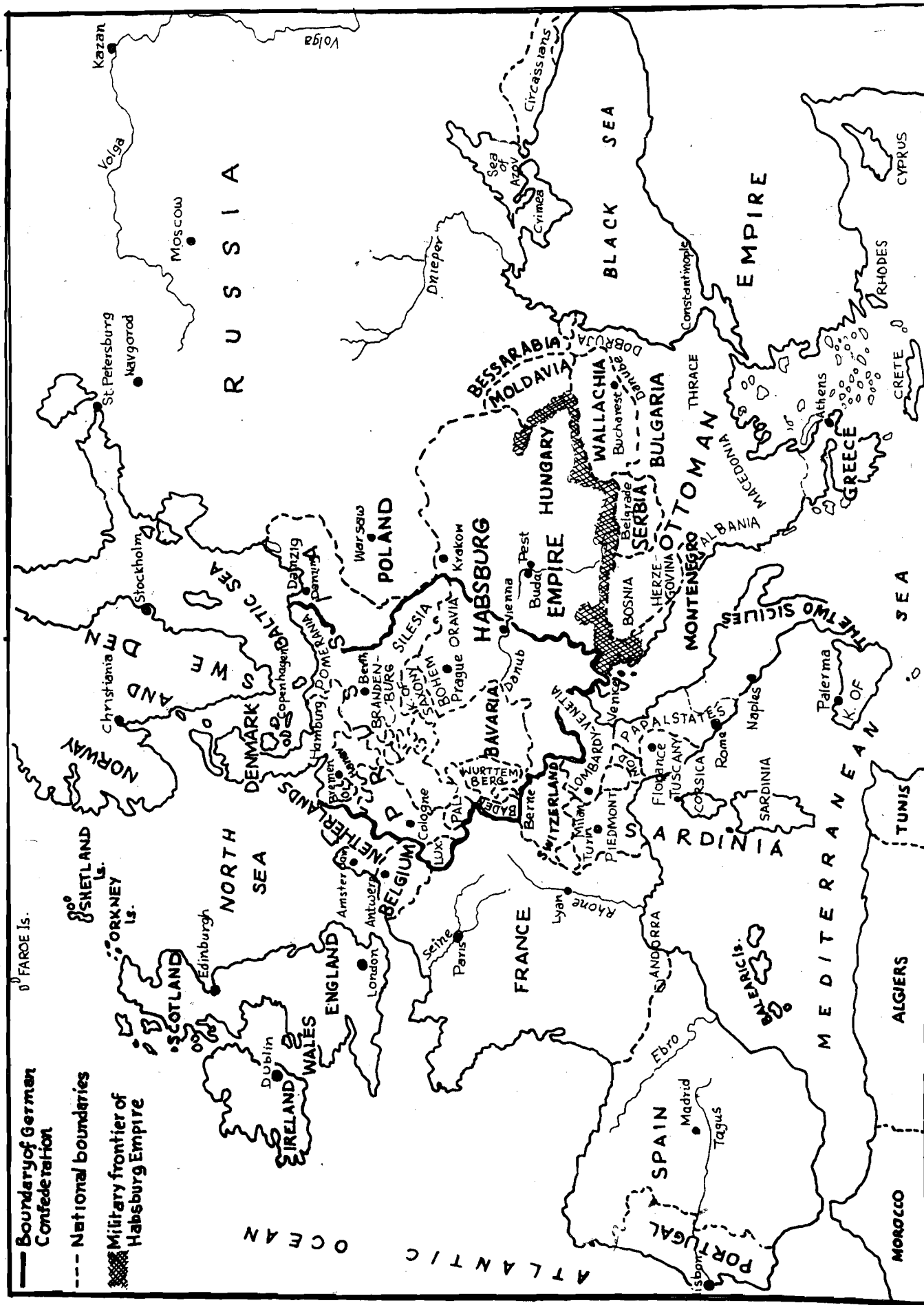
POLITICAL MAP OF EUROPE
(MID 19TH CENTURY)